

**व्यास** पुं. (तत्.) 1. विस्तार, प्रसार, फैलाव 2. संकलनकर्ता, विभागकर्ता, समस्त पद के अंगों को अलग-अलग करना 4. ऋषि पराशर एवं सत्यवती का पुत्र कृष्ण द्रुपदायन व्यास या वेदव्यास जिन्होंने पुराणों, महाभारत आदि की रचना की ज्या. किसी वृत्त के केंद्र से होकर दोनों ओर परिधि तक जाने वाली सरल रेखा 6. सौ पल वजन का धनुष।

**व्यासक्त** वि. (तत्.) 1. अति आसक्त, हतबुद्धि 2. व्याकुल, परेशान 3. संबद्ध, सलग्न।

**व्यासगद्दी** स्त्री. (तत्.+तद्.) 1. रामायण, महाभारत, पुराण आदि के कथावाचक विद्वानों के बैठने के लिए बनाई गई ऊँची चौकी या ऊँचा मंच, आसन 2. व्यासपीठ।

**व्यासपीठ** वि. (तत्.) कथावाचक विद्वानों के बैठने का स्थान जहाँ से वह बैठकर प्रवचन करते हैं, व्यास गद्दी, वेदव्यास जी ने पुराण प्रवचन की परंपरा का प्रवर्तन किया और तभी से कथावाचक के आसन को व्यासपीठ या व्यास गद्दी कहा जाता है।

**व्यासपूजा** स्त्री. (तत्.) आषाढ़ पूर्णिमा के दिन वेदव्यासकी स्मृतिमें मनाया जाने वाला व्रतोत्सव, गुरु पूजा उत्सव।

**व्यास-शैली** स्त्री. (तत्.) लेखन शैली जिसमें संक्षेप या सूत्र (समास शैली) रूप में उल्लेख न करके विस्तारपूर्वक समझाया जाता है।

**व्यासार्ध** पुं. (तत्.) ज्या. वृत्त या गोले के व्यास का आधा हिस्सा, त्रिज्या, अर्धव्यास, केंद्र से परिधि तक की दूरी।

**व्यासासन** वि. (तत्.) व्यास गद्दी, व्यासपीठ।

**व्यासीय** वि. (तत्.) व्यास से संबंधित, व्यास का ज्यामि. वृत्त या गोल के व्यास से संबंधित।

**व्याहार** वि. (तत्.) शब्द राशि, वाक्य, ध्वनि, नाद।

**व्याहृत** वि. (तत्.) 1. कहा हुआ, कथित, उच्चरित 2. खाया हुआ, भुक्त 3. मना किया हुआ, वर्जित, निषिद्ध 4. व्यर्थ 5. परस्पर विरोधी 6.

साहित्य में एक कथन दोष जब दो परस्पर बातें एक साथ कही जाती हैं।

**व्याहृति** स्त्री. (तत्.) 1. कथन, उक्ति, भाषण 2. गायत्री मंत्र के आरंभ में बोले जाने वाले शब्द-भूः, भुव और स्वः।

**व्युकूलन क्षमता** स्त्री. (तत्.) परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल बनने या कार्य करने की क्षमता।

**व्युच्छिन्ति/व्युच्छेद** वि. (तत्.) उन्मूलन, विनाश, बर्बादी।

**व्युज्या** स्त्री. (तत्.) व्युत्क्रमज्या का संक्षिप्त रूप।

**व्युत्क्रम** पुं. (तत्.) 1. क्रम विपर्यय, उलट फेर, व्यतिक्रम, गड़बड़ 2. मार्ग भटकना 3. विपरीतता।

**व्युत्क्रम कोटिज्या** स्त्री. (तत्.) गणि. एक त्रिकोणमितीय अनुपात, समकोण त्रिभुज में किसी कोण के लिए कर्ण और आधार का अनुपात।

**व्युत्क्रमज्या** स्त्री. (तत्.) गणि. एक त्रिकोणमितीय अनुपात, समकोण त्रिभुज में किसी कोण के लिए कर्ण और लंब का अनुपात।

**व्युत्क्रमानुपात** वि. (तत्.) गणि. उन दो चरों (अंको) का अनुपात जो इस प्रकार घटते-बढ़ते हैं कि एक के बढ़ने से दूसरा कम हो जाता है और दोनों चरों का गुणनफल सदा एक (स्थिर) रहता है जैसे- स्थिर ताप पर किसी गैस के आयतन और दाब का अनुपात व्युत्क्रमानुपात है।

**व्युत्थान** पुं. (तत्.) 1. उठ खड़ा होना 2. विरोध, किसी के विरुद्ध उठ खड़ा होना 3. बाधा, रुकावट, अवरोध योग. चित्त की क्षिप्त, मूढ़ और विक्षिप्त अवस्थाएँ जिनमें चित्त बहुत चंचल रहता है 4. मन के अनुकूल या स्वतंत्र कार्य 5. एक प्रकार का नृत्य।

**व्युत्पत्ति** स्त्री. (तत्.) 1. विद्वत्ता, पांडित्य 2. उत्पत्ति का मूल स्थान, उद्गम 3. किसी शब्द का मूल रूप जिससे विकसित होकर या बिगड़कर उसका वर्तमान रूप बना हो 4. भाषा. व्याकरण, कोश आदि में किसी शब्द की रचना का मूल धातु, प्रत्यय, उपसर्ग आदि बताते हुए